जगद्गुरु आरती

जयति जगद्गुरु गुरुवर की, गाओ मिलि आरती रसिकवर की।
गाओ गाओ मिलि आरती रसिकवर की॥

गुरुपद-नख-मणि-चन्द्रिका प्रकाश,
जाके उर बसे ताके मोह तम नाश।
जाके माथ नाथ तव हाथ करे वास,
ताते होय माया मोह सब ही निराश।
पावे गति मति रति राधावर की,गाओ मिलि आरती रसिकवर की ।
गाओ गाओ मिलि आरती रसिकवर की॥

अरे मन मूढ़ ! छाँडु नारी नर हाथ,
गुरु बिनु ब्रह्म श्याम हूँ न देंगे साथ।
कोमल 'कृपालु' बड़े कृपासिंधु नाथ,
पाके इन्हें आज तू अनाथ हो सनाथ।
इन्हीं के आधीन कृपा गिरिधर की,गाओ मिलि आरती रसिकवर की।
गाओ गाओ मिलि आरती रसिकवर की॥

भक्तियोग - रस - अवतार अभिराम,
करें निगमागम समन्वय ललाम।
श्यामा श्याम नाम रूप लीला गुण धाम,
बाँटि रहे प्रेम निष्काम बिनु दाम।
हो रही सफल काया नारी नर की,गाओ मिलि आरती रसिकवर की।
गाओ गाओ मिलि आरती रसिकवर की॥

लली लाल लीला का सलोना सुविलास,
छाया दिव्य दृष्टि बिच प्रेम का प्रकाश।
वैसा ही विनोद वही मंजु मृदु हास,
करें बस बरबस उच्च्व अट्टहास।
झूमि चलें चाल वही नटवर की, गाओ मिलि आरती रसिकवर की।
गाओ गाओ मिलि आरती रसिकवर की॥